

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, रहस्योद्घाटन और शास्त्र, सत्र 20, डीए कार्सन की उनकी पुस्तक, द एंड्यूरिंग अथॉरिटी ऑफ द क्रिश्चियन स्क्रिप्टर्स से पूछे जाने वाले प्रश्न

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्लेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा प्रकाशितवाक्य और पवित्र शास्त्र पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 20 है, डीए कार्सन की पुस्तक, *द एंड्यूरिंग अथॉरिटी ऑफ़ द क्रिश्चियन स्क्रिप्टर्स* से उनके अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न।

मैं डीए कार्सन द्वारा संपादित *द एंड्यूरिंग अथॉरिटी ऑफ़ द क्रिश्चियन स्क्रिप्टर्स* के अंत में अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्नों और उनके उत्तरों को जारी रख रहा हूँ, ताकि इनमें से कुछ जानकारी आपके साथ साझा कर सकूँ।

उम्मीद है कि आप में से कुछ लोग किताब खरीदेंगे और पढ़ेंगे, लेकिन किसी भी मामले में, आपको सबसे बेहतरीन चीज़ मिल रही है। आपको इनमें से कुछ निबंधों के निष्कर्ष मिल रहे हैं, और यह सार्थक है। वे सार्थक हैं।

14.1, कई विद्वानों ने प्रदर्शित किया कि इसकी उत्पत्ति में, ईसाई धर्म अत्यधिक विविधतापूर्ण था, धर्मशास्त्रीय रूप से बोलते हुए और सिद्धांत की एकता धीरे-धीरे और कठोरता से उस समूह द्वारा लागू की गई थी जो खुद को रूढ़िवादी के रूप में देखता था, एक प्रक्रिया जिसमें तीन या चार शताब्दियाँ लगीं। उत्तर: निश्चित रूप से, उस रुख के मुखर समर्थक रहे हैं। यह 1930 के दशक में वाल्टर बाउर की एक किताब के कारण लोकप्रिय हुआ, और आज इसका सबसे प्रमुख लोकप्रियकर्ता निस्संदेह बार्ट एहरमन है, जो पूर्व इंजील ईसाई है। लेकिन वास्तविक साक्ष्य दूसरी दिशा में चलते हैं।

ऐसा नहीं है कि कई धार्मिक दृष्टिकोणों से कोई विजयी हुआ, बल्कि एक साझा धार्मिक दृष्टिकोण से कई विविध विधर्म उभरे। इसलिए, बाउर थीसिस, जैसा कि इसे कहा जाता है, ने पॉल और पीटर के लेखन को कहा। प्रेरितों के काम की पुस्तक गलातियों में प्रकट करती है कि एक पीटर धर्मशास्त्र और एक पॉल धर्मशास्त्र था, और वे अलग-अलग गुटों में एक दूसरे के खिलाफ थे और इसी तरह।

कार्सन कहते हैं कि नहीं, वे इस पुस्तक के 14वें अध्याय के लेखक का सारांश दे रहे हैं। नहीं, वहाँ पर्याप्त एकता थी और विविध विधर्म, जिन्हें चर्च द्वारा गैरकानूनी घोषित किया गया था, उस एकीकृत दृष्टि के भीतर से उभरे।

14.2, कौन सा सबूत इस दावे का समर्थन करता है, जो बाउर और हाल ही में एहरमन के काम

को पलट देता है? सबसे पहले, नए नियम के पत्रों के भीतर, यीशु ने जो दिखाया है, उस पर ध्यान दें, कभी-कभी जितना आरोप लगाया जाता है, उससे कहीं अधिक धार्मिक एकता थी।

यह दिखाया गया है कि प्रेरित यीशु के सबसे करीबी लोग थे, और उन पर यीशु की छाप थी, इसलिए उनके रुख में अंतर, दूसरी सदी के उन लोगों की तुलना में अपेक्षाकृत कम था, जिनकी यीशु तक कोई सीधी पहुँच नहीं थी। दूसरा, नए नियम के सभी चार सुसमाचारों में विशिष्ट प्रेरितों के साथ स्पष्ट संबंध थे। इसके विपरीत, बाद के दस्तावेज़ जैसे कि यहूदा का सुसमाचार और मरियम का सुसमाचार, प्रेरितों के साथ कोई पता लगाने योग्य और विश्वसनीय संबंध नहीं रखते हैं।

तीसरा, इस धार्मिक प्रक्षेप पथ का अनुसरण करना संभव है, प्रोटो-ऑर्थोडॉक्स का प्रक्षेप पथ जो प्रेरितिक परंपरा को संरक्षित करता है, अन्य समूहों के साहित्य के विपरीत जिनकी प्रेरणा स्पष्ट रूप से प्रेरितिक परंपरा से नहीं जुड़ती है। हमें परमेश्वर और उसके वचन के बीच के संबंध के बारे में कैसे सोचना चाहिए? हालाँकि यह स्पष्ट है कि परमेश्वर और उसका वचन सत्तात्मक रूप से समान नहीं हैं, फिर भी, शास्त्र बार-बार और अत्यधिक विविध तरीकों से जोर देता है कि परमेश्वर के वचन पर विश्वास करना परमेश्वर पर विश्वास करना है, परमेश्वर के वचन का पालन करना परमेश्वर की आज्ञा मानना है, परमेश्वर के वचन की अवज्ञा करना उसकी अवज्ञा करना है, इत्यादि। शास्त्र परमेश्वर और उसके वचन को भ्रमित नहीं करता है, बल्कि यह उसके वचन को स्वयं परमेश्वर के अधिकार से संपन्न करता है।

क्या यह संभव नहीं है, 16.2, बाइबल में सब कुछ मानने के बारे में बहुत अधिक परेशान हुए बिना सुसमाचार पर विश्वास करना? निश्चित रूप से, यह संभव है; लोग इसे हर समय करते हैं, लेकिन इसे लगातार करना संभव नहीं है। या, मामले को और अधिक नाटकीय रूप से कहें तो, जल्दी या बाद में, कोई आश्चर्य करता है कि क्या यह सुसमाचार है जिस पर वास्तव में विश्वास किया जा रहा है। पुराने नियम की गवाही, प्रेरितों की गवाही, स्वयं यीशु की शिक्षा का सुसंगत पैटर्न न केवल सुसमाचार को बल्कि सुसमाचार के लिए उचित प्रतिक्रिया को भी उसके वचन में परमेश्वर के आत्म-प्रकटीकरण के आकार से जोड़ता है।

तो हाँ, हम सुसमाचार को बचाने के लिए मानते हैं, लेकिन ईसाई जीवन में सुसमाचार पर विश्वास करने से कहीं ज्यादा शामिल है। और इसलिए, परमेश्वर ने चर्च को शिक्षकों को अध्ययन करने और हमें प्रोत्साहित करने और उनके कार्यों के फल को साझा करने के लिए दिया है, जिसका एक उद्देश्य हमें कम से कम परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने के लिए प्रेरित करना है। शास्त्रों के पीछे दो लेखकों, 17.1, एक दिव्य और एक मानव, की धारणा आंतरिक रूप से कठिन है।

हमें इन चीज़ों के बारे में कैसे सोचना शुरू करना चाहिए? इसका उत्तर यह है कि चुनौती बाइबल की भाषा के प्रति ही वफ़ादार रहने की है। अगर कोई मानवीय लेखक को ईश्वरीय लेखक के विरुद्ध खड़ा करता है, तो अगर एक के महत्व को कम करके आंका जाता है और दूसरे को कम करके आंका जाता है, और कई प्रस्तावित मॉडल उस गलती के दोषी हैं, तो यह निश्चित रूप से समस्याग्रस्त है। कभी-कभी, चर्चा उन शब्दों पर आ जाती है जिन्हें गलत समझा गया है।

उदाहरण के लिए, सदियों से कई लोगों ने कहा है कि धर्मग्रंथ ईश्वर द्वारा लिखे गए हैं, जिसके बारे में कुछ लोगों को लगता है कि यह मानव लेखक को एक सचिव के रूप में दर्शाता है जो श्रुतलेख लिख रहा है। लेकिन उन धर्मशास्त्रियों में से सर्वश्रेष्ठ जो श्रुतलेख की भाषा का उपयोग करते हैं, उदाहरण के लिए, कैल्विन ने लैटिन डिक्टेट को वितरण के साधनों का वर्णन करने के लिए नहीं बल्कि परिणाम पर जोर देने के लिए चुना; धर्मग्रंथ के शब्द वास्तव में ईश्वर के शब्द हैं। साथ ही वे मानव लेखकों द्वारा किए गए योगदान पर पूरी तरह से जोर देते थे, जो केवल प्रतिलेखन से कहीं अधिक था।

मैंने पहले भी व्याख्यानों में यह कहा है : यह दावा करना कि चर्च ने ईश्वरीय आदेश का पालन किया है, उस भाषा के उपयोग को बाइबल के परिणाम के साथ भ्रमित करना है, उसे प्रेरणा के सिद्धांत के साथ भ्रमित करना है, जो कि यांत्रिक लेखकों द्वारा यांत्रिक सचिवों के रूप में कार्य करने के माध्यम से शब्द का ईश्वरीय आदेश है, जो कि बस समस्याग्रस्त है।

18.2, क्या उत्पत्ति में सृष्टि का वर्णन बेबीलोनियन एनुमा एलीश और अन्य प्राचीन निकट पूर्वी सृष्टि मिथकों जैसा लगता है? निश्चित रूप से, कुछ दिलचस्प समानताएँ हैं, लेकिन इन समानताओं से निकाले गए जिम्मेदार निष्कर्ष यह मांग करते हैं कि हम न केवल उत्पत्ति और बेबीलोनियन मिथकों के बीच के अंतरों का मूल्यांकन करें, बल्कि उनकी स्पष्ट समानताओं के संभावित स्पष्टीकरणों का भी मूल्यांकन करें। सावधानीपूर्वक अध्ययन से उत्पत्ति और एनुमा एलीश के बीच विश्वदृष्टि में भारी अंतर का पता चलता है।

बाइबिल के अधिकार के अपने उपचारों, 19.1, में, क्या ईसाइयों ने बाइबिल की विविध साहित्यिक शैलियों पर बहुत अधिक ध्यान नहीं दिया है? हाँ, यह एक उचित टिप्पणी है। बाइबिल के अधिकार के सबसे गंभीर उपचार स्वीकारोक्ति और चर्च संबंधी सेटिंग्स में विकसित हुए हैं। बाइबिल की साहित्यिक शैलियों के कई बेहतरीन उपचार विश्वविद्यालय की सेटिंग्स में विकसित हुए हैं।

हाल के वर्षों में, हालांकि, अधिकार और साहित्यिक शैली के बीच के कुछ रिश्तों पर बहुत अधिक ध्यान दिया गया है, कम से कम नहीं, और कुछ हद तक अलग परिणामों के साथ, ब्रेवार्ड चाइल्ड्स और केविन जे वेन हूसर के लेखन में। शास्त्र का अधिकार शास्त्र की विविध साहित्यिक शैलियों से कैसे संबंधित है?

19.2, उदाहरण के लिए, बाइबिल की क्रमबद्ध कथाएं, इसकी कथा, इसकी क्रमबद्ध कथा, इसकी कथा, न केवल बाइबिल की बाकी सामग्री को व्यवस्थित करती है बल्कि यह स्थापित करती है कि वास्तव में क्या हुआ था, और कैसे कथा यीशु मसीह के ऐतिहासिक रहस्योद्घाटन की ओर ले जाती है। जहां कानून मांग करता है, जहां भविष्यवाणी प्रोत्साहित करती है, फटकारती है, धमकी देती है और भविष्यवाणी करती है, प्रत्येक शैली के पास न केवल अपनी अपील करने का अपना तरीका होता है

सावधानीपूर्वक अध्ययन से न केवल यह पता चलता है कि प्रत्येक विधा कैसे काम करती है, बल्कि यह भी पता चलता है कि प्रत्येक विधा एक एकीकृत रहस्योद्घाटन प्रदान करने के लिए

समग्र रूप से कैसे योगदान देती है। तो, हाँ, बाइबल के विभिन्न प्रकार के साहित्य और इसकी विभिन्न विधाओं के संदर्भ में साहित्य का अध्ययन उन लोगों के लिए फलदायी है जो बाइबल पर विश्वास करते हैं और विधाओं पर ध्यान देते हैं क्योंकि शास्त्र में उन विधाओं का सावधानीपूर्वक अध्ययन करने से पहले हमने जितना समझा था, उससे कहीं अधिक बताया गया है। क्या

बाइबल की अत्यधिक विविध साहित्यिक विधाओं से जुड़े लाभ हैं, 19.3? हाँ, निश्चित रूप से।

बाइबल की विविधता, जैसा कि बैरी वेब ने कहा, हमें बताती है कि बाइबल का अधिकार, मैं उद्धृत कर रहा हूँ, वह ऐसा अधिकार है जो पूरी तरह से हमारी मानवता से जुड़ता है। यह हमारी मानवता के भीतर से हमसे बात करता है, न कि केवल बाहर से, जैसे कि सृष्टि में, उदाहरण के लिए। यह कच्ची शक्ति का अधिकार नहीं है, बल्कि वह अधिकार है जो हमारी कमजोरी, संघर्ष और पापपूर्णता को पूरी तरह से पहचानता है और उससे जुड़ता है।

दूसरे शब्दों में, यह एक दयालु अधिकार है, न कि एक दबावपूर्ण अधिकार। उद्धरण समाप्त करें। इस संबंध में, बाइबल कुरान से बहुत अलग है।

उत्तरार्द्ध एक ऐसे ईश्वर को चित्रित करता है जो किसी तरह अपने स्वयं के देवता को खतरे में डाले बिना मानवता में भाग नहीं ले सकता। बाइबिल का ईश्वर न केवल मनुष्यों के साथ कई स्तरों पर बातचीत करता है, जो विभिन्न साहित्यिक शैलियों में परिलक्षित होता है, बल्कि स्वयं एक मानव बनकर सर्वोच्च रूप से बातचीत भी करता है। वह ईश्वर है, उद्धरण, जिसने न केवल हमें एक पुस्तक और पैगंबर दिया, बल्कि हमें खुद को भी दिया। उद्धरण बंद करें।

20.1, शास्त्र की स्पष्टता का क्या मतलब है? आखिरकार, बहुत से लोगों को बाइबल बहुत अस्पष्ट लगती है। इसका मतलब यह नहीं है कि शास्त्र का हर हिस्सा समझना उतना ही आसान है, या शिक्षकों की कोई ज़रूरत नहीं है, या पाठ के अर्थ के बारे में हर राय समान रूप से मूल्यवान है।

बल्कि, इसे, जैसा कि मार्क थॉम्पसन के शीर्षक में कहा गया है, एक दयालु पिता के उदार उपहार के रूप में सोचा जाना चाहिए। भाषा स्वयं ईश्वर की ओर से एक उपहार है, और ईश्वर ने अपने मुक्ति उद्देश्यों को उस भाषा में प्रस्तुत करना चुना है जो उसने अपने स्वरूप-धारकों को दी है। ईश्वर का देहधारी पुत्र बार-बार शास्त्र की स्पष्टता को पूर्व निर्धारित करता है, खासकर तब जब वह बार-बार यह प्रश्न पूछता है, क्या तुमने नहीं पढ़ा? और आत्मा स्वयं ईश्वर के वचन के प्रावधान और उसके ग्रहण दोनों में शामिल है।

संक्षेप में, उद्धरण, शास्त्र की स्पष्टता शास्त्र की वह गुणवत्ता है जो इस तथ्य से उत्पन्न होती है कि यह अंततः ईश्वर का प्रभावी संचार कार्य है, यह सुनिश्चित करता है कि इस पाठ का अर्थ उन सभी के लिए सुलभ है जो विश्वास में इसके पास आते हैं। उद्धरण बंद करें, मार्क थॉम्पसन का निबंध। संख्या 20।

क्या यह थोड़ा सा चक्राकार नहीं है, 22.1, सुसमाचारों का हवाला देकर शास्त्रों के बारे में यीशु के दृष्टिकोण को स्थापित करने का प्रयास करना, जो शास्त्रों का हिस्सा हैं? निश्चित रूप से, कोई

व्यक्ति शास्त्र चक्रीयता से बचना चाहता है, लेकिन एक नरम चक्रीयता है जो अपरिहार्य है जब भी कोई किसी भी क्षेत्र में सर्वोच्च अधिकार का दावा करने वाली किसी भी चीज़ पर विचार करता है। यदि, उस सर्वोच्च अधिकार को सही ठहराने के लिए, किसी को किसी बाहरी अधिकार से अपील करने के लिए मजबूर किया जाता है, तो यकीनन, वह बाहरी अधिकार पहले वाले को विस्थापित कर देता है, जो हमें उसी तनाव के साथ अपना अधिकार स्थापित करने के लिए कहता है। व्यक्ति एक अनंत प्रतिगमन में गिर जाता है।

दूसरे शब्दों में, आप कभी भी किसी प्राधिकरण को स्थापित करने के लिए, उस प्राधिकरण को खोजने के लिए जो उस प्राधिकरण को स्थापित करता है, स्थापित नहीं कर पाते हैं। कई विद्वान किसी प्रकार की नरम परिपत्रता की अनिवार्यता को स्वीकार करते हैं। वास्तव में, यह वांछनीय है।

पुस्तक का अध्याय 22. पहला प्रश्न. मुझे पुराने नियम, नए नियम में पुराने नियम के उपयोग के बारे में बताइए 23.2. नए नियम में पुराने नियम का उपयोग विविधतापूर्ण और जटिल है।

कभी-कभी, नए नियम के लेखक पुराने नियम की भाषा का उपयोग पुराने नियम के अंश से भाषाई संबंध से अधिक कुछ भी दावा किए बिना करते हैं। जहाँ संबंध का इरादा है, वह कई प्रकार का हो सकता है। उदाहरण के लिए, किसी विशिष्ट भविष्यवाणी की प्रत्यक्ष पूर्ति, एक सूक्ष्म संदर्भगत प्रतिध्वनि, किसी प्रकार की सावधानीपूर्वक परिभाषित जनगणना, पूर्ण अर्थ, किसी प्रकार का प्रतीकात्मक संबंध और बहुत कुछ।

जब इन प्रकार के संबंधों की सावधानीपूर्वक जांच की जाती है, तो जिस तरह से नए नियम के लेखक पुराने नियम का उपयोग करते हैं, वह पहली सदी के कुछ समानांतर यहूदी धर्मों में पुराने नियम के उपयोग की तुलना में कहीं अधिक विश्वसनीय है। इस पुस्तक के 23वें अध्याय का हवाला देते हुए कार्सन तर्क देते हैं कि नया नियम पुराने नियम का जिम्मेदारी से उपयोग करता है। लेकिन यह कोई आसान मामला नहीं है।

यह हो चुका है। वह कहते हैं कि यह विविधतापूर्ण है। यह विविधतापूर्ण है और कभी-कभी जटिल भी।

लेकिन हमें धर्मशास्त्र से धर्मशास्त्र की ओर कैसे बढ़ना चाहिए? 24.2. कई सुझाव सामने रखे गए हैं, उदाहरण के लिए, केवल उन सभी बातों को जोड़ दें जो शास्त्र सिखाता है। सिद्धांत। ठोस उदाहरणों से लेकर सार्वभौमिक अमूर्त सिद्धांतों तक के सिद्धांत।

शास्त्र में स्पष्ट रूप से जो कहा गया है, उसके बजाय शास्त्र के प्रक्षेप पथ का अनुसरण करें, और भी बहुत कुछ। प्रत्येक मामले में, प्रस्ताव की जो भी खूबियाँ हों, उससे बचने के लिए खतरे हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई प्रिंसिपलाइज़िंग विकल्प का अनुसरण करता है, तो अमूर्त सिद्धांतों को, जो पाठ से संभावित निष्कर्ष हैं, पाठ के ठोस विवरणों की तुलना में अधिक आधिकारिक बनाना आसान है।

हमें यह देखना चाहिए कि जहाँ शास्त्रों में सर्वोच्च अधिकार है, वहीं परमेश्वर ने हमें शिक्षकों को चर्च का लंबा इतिहास, आत्मा, हमारे मन और हृदय का उल्लेख नहीं करने के लिए भी दिया है, न कि उन सिद्धांतों को विकसित करने के लिए जिनके द्वारा हम पाठ को महारत हासिल करते हैं, बल्कि इसलिए कि हम पाठ द्वारा नियंत्रित हो सकें, उसके अधीन रह सकें, उसमें सांस ले सकें, उसे जी सकें और परमेश्वर की सलाह के प्रति वफ़ादारी की तलाश कर सकें। 25.1, परमेश्वर के बारे में कुछ भी जानने की क्षमता पर व्यापक संदेह के बारे में हम क्या कह सकते हैं? ज्ञानमीमांसा, ज्ञान का अध्ययन और हम कैसे जानते हैं या सोचते हैं कि हम जानते हैं, एक चिरस्थायी चुनौतीपूर्ण विषय है। यह न केवल परमेश्वर के ज्ञान से हमारा क्या मतलब है, इस बारे में सबसे परिष्कृत चर्चा के पीछे छिपा है, बल्कि यीशु मुझसे प्रेम करता है, यह मैं जानता हूँ, क्योंकि बाइबल मुझे ऐसा बताती है।

चूँकि यह विषय वर्तमान में बहुत अव्यवस्थित है, इसलिए कुछ प्रमुख पहलुओं पर एक सर्वेक्षण पढ़ना उपयोगी है जिन पर वर्तमान में बहस हो रही है या जिन्हें अनदेखा किया जा रहा है। मुझे और बताइए। ज्ञानमीमांसा का मूल्य क्या है, 25.2? बहुत सारे हैं।

उनमें से एक है इस बात पर ध्यान केंद्रित करना कि न्यायोचित या उचित विश्वास क्या है। मैं मान सकता हूँ कि चाँद हरे पनीर से बना है, लेकिन क्या यह विश्वास उचित है? मैं मान सकता हूँ कि यीशु ही ईश्वर तक पहुँचने का एकमात्र रास्ता है, लेकिन क्या यह विश्वास उचित है? कोई व्यक्ति जल्द ही प्रश्नों की विस्तृत श्रृंखला सीख जाता है, संज्ञानात्मक, नैतिक, मानवीय, सीमितता और पापपूर्णता, साक्ष्य, कारण, दिव्यता की भावना, ईश्वर ने मनुष्यों में जो दिव्यता का भाव बनाया है, रहस्योद्घाटन, विश्वास, जो अनुशासन से बंधे हैं। दूसरे शब्दों में, ज्ञानमीमांसा अध्ययन के योग्य है, लेकिन यह वास्तव में एक जटिल मामला है।

क्या अचूकता, 28.1 जैसे शब्द का आकर्षण और उपयोगिता नहीं खो जाती है, अगर इसे शिकागो वक्तव्य की तरह अंतहीन योग्यताओं, भेदों और परिभाषाओं द्वारा समर्थित किया जाना है? उत्तर: ऐसी योग्यताएँ और भेद धर्मशास्त्रीय प्रवचन में इस्तेमाल किए जाने वाले लगभग हर महत्वपूर्ण शब्द को घेर लेते हैं, उदाहरण के लिए, ईश्वर, औचित्य, सत्य, आत्मा, अनुग्रह, इत्यादि। प्रत्येक मामले में, कोई एक सरल परिभाषा प्रदान कर सकता है, लेकिन बाद के आदान-प्रदान के कटु और जोरदार में, यह आश्चर्यजनक नहीं है कि विस्तृत और कभी-कभी तकनीकी भेद किए जाने चाहिए। तो, अचूकता की कौन सी सरल परिभाषा आगे बढ़ाई जा सकती है? वह ब्रिटिश दार्शनिक और इंजील ईसाई पॉल हेल्म का हवाला देते हैं।

पॉल हेल्म के शब्दों में, उद्धरण, एक अभिव्यक्ति, एक कथन, एक वाक्य, एक सूत्र, एक दस्तावेज, एक दस्तावेज का एक हिस्सा त्रुटिहीन कहा जा सकता है यदि यह बिना किसी त्रुटि के पूरी तरह से सत्य है, उद्धरण बंद करें। ओह बॉय। आजकल, व्याख्यात्मक समुदायों की चर्चा बढ़ रही है।

इसका क्या मतलब है? पश्चिम में व्यक्तिवाद का बोलबाला है, इसलिए व्याख्यात्मक समुदाय ईसाइयों के समूह हैं जो एक साथ बाइबल का अध्ययन करते हैं। ऐसी बात जानबूझकर की गई हो सकती है, या योजनाबद्ध चर्चाएँ हो सकती हैं। व्याख्यात्मक समुदायों में विभिन्न व्याख्याओं को

सुनने की इच्छा ऐसे समय में और भी अधिक आकर्षक हो जाती है जब ईसाई वैश्विक ईसाई धर्म के बारे में अधिक से अधिक जागरूक हो रहे हैं।

फिर एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है, 29.2. तो फिर, क्या विभिन्न समुदायों द्वारा की गई सभी व्याख्याएँ समान रूप से वैध और समान रूप से विश्वसनीय हैं? आप बस खतरे पर अपनी उंगली रखते हैं। एक ओर, यह पहचानना यथार्थवाद और विनम्रता दोनों का कार्य है कि किसी भी व्यक्ति, किसी भी एकल समुदाय के पास किसी भी व्यक्तिगत बाइबिल मार्ग या विषय के बारे में पूरी सच्चाई नहीं है। एक-दूसरे की बात सुनने से निश्चित रूप से एक समृद्ध व्याख्या प्राप्त होगी जो अन्यथा नहीं होगी।

कभी-कभी, यह सीधे सुधार जारी करता है। लेकिन दूसरी ओर, कोई भी व्यक्ति झूठे सिद्धांत, झूठे मसीह और झूठे सुसमाचार के बारे में बाइबिल में दी गई कई चेतावनियों को याद किए बिना नहीं रह सकता। सभी व्याख्याएँ समान नहीं होती हैं।

और सिर्फ इसलिए कि किसी व्याख्या या अन्य को किसी विशेष समुदाय द्वारा समर्थित और संरक्षित किया जाता है, इसका मतलब यह नहीं है कि यह शास्त्र के प्रति वफ़ादार है। और इसलिए हम दूसरों की बात ध्यान से सुनने, बाइबिल को फिर से पढ़ने, सुधारे जाने के लिए उत्सुक होने, अगर इसका मतलब ज़्यादा निष्ठा है, और शास्त्र पर इस तरह से खड़े न होने के लिए भी उत्सुक हैं जैसे कि हम अंतिम न्यायाधीश हैं, जबकि वास्तव में, शास्त्र को हमारे ऊपर खड़ा होना चाहिए और हमारा न्यायाधीश होना चाहिए। जब विज्ञान और बाइबिल में टकराव होता है, 30.2, तो ईसाइयों को कैसे आगे बढ़ना चाहिए? उन्हें चीजों के बारे में कैसे सोचना चाहिए? शास्त्र के पास अंतिम अधिकार है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि शास्त्र की जिस विशेष व्याख्या का हम इस या उस बिंदु पर समर्थन करते हैं, वह अंतिम अधिकार है।

इसलिए, हम धर्मग्रंथ और धर्मग्रंथ की हमारी व्याख्या के बीच अंतर करते हैं। इसलिए, विनम्रता के साथ चलना और अच्छी तरह से सुनना महत्वपूर्ण है। विज्ञान का इतिहास हमें यह भी याद दिलाता है कि वैज्ञानिक सिद्धांत न केवल सिद्धांत रूप में संशोधन योग्य हैं, बल्कि विज्ञान इसी तरह काम करता है, बल्कि अक्सर वास्तव में संशोधित किए गए हैं।

इसलिए, ईसाइयों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे चाहे वर्तमान वैज्ञानिक प्रतिबद्धताओं में कितने भी गहरे क्यों न उलझे हों, उन्हें हर उस सिद्धांत से भयभीत नहीं होना चाहिए जो वैज्ञानिक होने का दावा करता है। इस बीच, हमें धर्मग्रंथों और विभिन्न विज्ञानों को अपनी-अपनी शर्तों पर बोलने देना चाहिए और धर्मग्रंथों को आज के विज्ञान को संबोधित करने के लिए मजबूर करके व्याख्यात्मक उलझन को बढ़ाने से बचना चाहिए। गहरे स्तर पर, क्या धर्मग्रंथों की पवित्र पुस्तकें और विभिन्न विश्व धर्म, क्या विभिन्न विश्व धर्मों के धर्मग्रंथों की पवित्र पुस्तकें वास्तव में एक ही बात नहीं कह रही हैं? हालाँकि यह दृष्टिकोण पश्चिमी दुनिया में बहुत आम है, कम से कम बहुलवाद के कुछ रूपों के प्रति पश्चिम की प्रतिबद्धता के कारण, वास्तव में इसका जिम्मेदारी से बचाव नहीं किया जा सकता है।

ये विभिन्न धर्मग्रंथ इतनी सारी परस्पर विरोधी बातें कहते हैं, न केवल विस्तार के स्तर पर बल्कि सबसे गहन वैचारिक मामलों पर, कि यह दावा करना कोई मतलब नहीं रखता कि वे वास्तव में एक ही बात कह रहे हैं। मसीह ईश्वर का पुत्र है, या वह नहीं है, या हम सभी एक ही अर्थ में ईश्वर के पुत्र हैं। ईश्वर एक है, या अनेक ईश्वर हैं।

एक ईश्वर है, सरल इस्लाम, या एक ईश्वर है, ईसाई धर्म का जटिल त्रित्ववाद? सृष्टिकर्ता और प्राणी के बीच एक अपूरणीय खाई है, या हम मनुष्य स्वयं ईश्वर बनने की राह पर हैं। हम अपने कर्मों और विशुद्ध कृपा से बचाए जाते हैं, इत्यादि इत्यादि।

इसके अलावा, जो लोग दावा करते हैं कि ये सभी पवित्र पुस्तकें वास्तव में एक ही बात कह रही हैं, वे न केवल विभिन्न परंपराओं में आस्था रखने वाले लोगों की बुद्धि का अपमान कर रहे हैं, बल्कि वे धार्मिक आधार पर गंभीर बातचीत करना असंभव बना देते हैं। गंभीर बातचीत मतभेदों को छिपाने से इनकार करती है, बल्कि उन्हें सम्मानपूर्वक और दयालुता से पेश करती है, लेकिन हमारे दृष्टिकोण से ईसाई विश्वास का त्याग किए बिना। क्या यह आखिरी सवाल हो सकता है? क्या बाइबल के दावे, 31.2, एक प्रकार का परिपत्र तर्क नहीं है जो शुरू में आत्म-पराजित होता है? हम फिर से उसी परिपत्र व्यवसाय पर वापस आ गए हैं।

वे चक्राकार हैं, लेकिन क्रूरतापूर्वक चक्राकार नहीं हैं। किसी परम सत्ता में विश्वास स्थापित करते समय कुछ हद तक चक्रीयता अपरिहार्य है। इसके बजाय, जब बाइबल के अधिकार को बाइबल से बाहर किसी बड़े अधिकार के आधार पर स्थापित किया जाता है, तो बाइबल स्वयं सर्वोच्च अधिकार नहीं होगी।

तो, वह पुरानी बात को दोहरा रहा है। क्या ईसाई अपनी पवित्र पुस्तक कुरान को उसी तरह देखते हैं जिस तरह ईसाई अपनी पवित्र पुस्तक बाइबिल को देखते हैं? समानताएँ सतही हैं। स्पष्ट रूप से, दोनों धर्मों में से प्रत्येक की एक पुस्तक है जिसे उनके संबंधित अनुयायी पवित्र और आधिकारिक मानते हैं।

फिर भी, अंतर समानताओं की तुलना में अधिक व्यापक और अधिक महत्वपूर्ण हैं। उदाहरण के लिए, बाइबिल को कई मानव लेखकों ने डेढ़ सहस्राब्दी की अवधि में तीन भाषाओं में लिखा था। हालाँकि यह कई साहित्यिक शैलियों से बना है, सामूहिक रूप से, बाइबिल की किताबें सृष्टि से लेकर पूर्णता तक के इतिहास का पता लगाती हैं।

ईसाई मानते हैं कि मानव लेखक पवित्र आत्मा से इतने प्रभावित थे कि परिणामी पाठ वास्तव में ईश्वर द्वारा प्रेरित है। इसके विपरीत, मुसलमानों का मानना है कि कुरान के सभी शब्द, जो अरबी में हैं, मानव मध्यस्थता के बिना ईश्वर के शब्द हैं। मुहम्मद को प्रेरित या विशिष्ट शब्दावली या इस तरह का योगदान देने वाला नहीं माना जाता है।

दोहरे लेखकत्व की कोई धारणा मौजूद नहीं है। कुरान के शब्द ईश्वर के शब्द हैं। मुहम्मद केवल ईश्वर के एक साधन थे, जिन्होंने लगभग 22 साल की अवधि में जो कुछ भी ईश्वर ने उन्हें फ़रिश्ते गेब्रियल के माध्यम से दिया था, उसे याद करके लिख दिया।

संरचनात्मक रूप से, कुरान, पुरुषों और महिलाओं के कई अनुभवों के माध्यम से इतिहास के एक चाप को रेखांकित करने से बहुत दूर, खुद को 114 सूरह, अध्यायों में प्रस्तुत करता है, जो मोटे तौर पर अवरोही लंबाई है, अधिकांश सामग्री ईश्वर द्वारा मनुष्यों को सीधे संबोधित करने से बनी है, जो आमतौर पर आज्ञाकारी और उपदेशात्मक फोकस में है। मैं आपको इस अच्छी किताब के लिए बधाई देता हूं, और मैं आपको इस पाठ्यक्रम को सुनने के लिए धन्यवाद देता हूं जिसमें हमने महान और दयालु ईश्वर का अध्ययन किया है जो सभी मनुष्यों के लिए हर समय सभी जगहों पर सामान्य रहस्योद्घाटन में और कुछ मनुष्यों के लिए कभी-कभी कुछ जगहों पर कई तरीकों से विशेष रहस्योद्घाटन में प्रकट होता है, लेकिन विशेष रूप से उसके बेटे के अवतार और पवित्र शास्त्रों में। देखने और सुनने के लिए धन्यवाद।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा प्रकाशितवाक्य और पवित्र शास्त्र पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 20 है, डीए कार्सन द्वारा उनकी पुस्तक, *द एंज्यूरिंग अथॉरिटी ऑफ़ द क्रिश्चियन स्क्रिप्चर* से पूछे गए अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न।